हौज कौसर

हद पार बेहद है, बेहद पार अक्षर।
अक्षर पार वतन है, जागिये इन घर।।

परमधाम के 25 पक्ष, श्री राज श्यामा जी एवं हम सब सखियों के लीला स्थली हैं। इनमें से एक पक्ष है – हौज कौसर ताल। रंगमहल की उत्तर दिशा में स्थित पुखराज पहाड़ से यमूना जी प्रकट होती हैं, जो दक्षिण दिशा में मुड़कर रंगमहल के सामने से होते हुए, फिर पश्चिम दिशा में मुड़कर हौजकौसर ताल में जाकर समा जाती हैं। पुखराज पहाड़ से, जहां से यमूना जी प्रकट होती है, वहां से लेकर हौजकौसर तक यमूना जी के दायें–बायें चार–चार रौंसें साथ–साथ जाती हैं।

पहली जल रौंस, जो कि यमूना जी के जल से लगकर चलती है, जिसका स्तर (लेवल) यमूना जी के जल के बराबर है। दूसरी रौंस पाल है, जो कि जल रौंस से कमरभर (3 सीढ़ी) ऊँची है।

तीसरी वन की रौंस है, जिस पर कोई भी वृक्ष नहीं आये हैं, यहां रंगबिरंगी नूरमयी रेती बिछी है। वन रौंस भी जल रौंस की तरह पाल से कमर भर नीचे है। पाल से वन रौंस पर 3–3 सीढ़ियां आयी हैं।

चौथी पुखराजी रौंस, वन की रौंस के बराबर आयी है, जिस पर बड़ोवन के वृक्षों की दो पंक्तियाँ पुखराज पहाड़ से ही चली आ रही हैं। सुखपाल पर सवार होकर आकाश से देखने पर यमूना जी एवं इन चारों रौंसों का बहुत ही सुंदर दृश्य दिखायी देता है। ये चारों रौंसें पुखराज पहाड़ से लेकर हौज कौसर ताल तक यमूना जी के साथ–साथ आयी हैं। यमूना जी जब हौजकौसर ताल में पूर्व दिशा से प्रवेश करती हैं तो जल रौंस वहीं पूर्व दिशा में समाप्त हो जाती है किंतु बाकि तीन रौंसें हौजकौसर के चारों तरफ घेर कर आयी हैं।

आईये! अब हौज कौसर ताल में सैर करते हैं। हौज कौसर ताल के बाहरी तरफ सर्वप्रथम तीन रौंसें आयी हैं। सबसे पहले पुखराजी रौंस आयी है, जिस पर बड़ोवन के वृक्षों की दो हारें आयी हैं। ये वृक्ष दो भोम ऊँचे हैं। इसके भीतरी तरफ वन की रौंस आयी है। जब हम सखियां वाला जी के साथ शुक्ल पक्ष की चौदस को यहां आते हैं, तो हमारे सुखपाल इसी वन की रौंस पर उतरते हैं। यमूना जी की पाल हौज कौसर की ढलकती पाल से मिल गयी है, जिससे उसकी चौड़ाई 500 मंदिर से बढ़कर 750 मंदिर की हो गयी है। ढलकती पाल पर बड़ोवन के वृक्षों की दो हारें आयी हैं, जिनकी ऊंचाई 5 भोम है। ढलकती पाल के भीतरी तरफ (ढलकती पाल के ही 250 मंदिर के भीतरी हिस्से में) संक्रमणिक सीढ़ियां आयी हैं, जो कि एक भोम ऊपर चौरस पाल तक गयी हैं। चौरस पाल के ऊपर बड़ेवन के वृक्षों की तीन हारें आयी हैं। ये वृक्ष भी पांच भोम ऊंचे आये हैं। इन

वृक्षों की पांचों हारों के मध्य, डालियों की मेहराबों में हिण्डोले लगे हैं। इन वृक्षों की डालियां चौरस पाल व जल रौंस को पार करते हुए जल चबूतरे तक छायी हुई हैं। इन वृक्षों की भोमों पर से दौड़ते हुए सखियां हौज कौसर ताल में छलांग लगा देती हैं। इस चौरस पाल पर चारों दिशा में चार घाट आये हैं। पूर्व दिशा में 16 देहुरी का घाट, पश्चिम दिशा में झुण्ड का घाट, उत्तर दिशा में 9 देहुरी का घाट तथा दक्षिण दिशा में 13 देहुरी का घाट आया है।

आईये! सर्वप्रथम 9 देहुरी के घाट की शोभा देखते हैं। चौरस पाल के ऊपर बाहर की तरफ से पहले हिस्से (250 मंदिर) में सर्वप्रथम कमर भर ऊंचा चौरस (250 मंदिर लम्बा–500 मंदिर का चौड़ा) चबूतरा आया है। चबूतरे से चारों दिशाओं में 3–3 सीढ़ियां उतरी हैं। सीढ़ियों की जगह छोड़कर चारों तरफ चबूतरे की किनार पर रत्नजड़ित कठेड़ा (ग्रिल) आया है। इस चबूतरे के ऊपर बहुत ही सुंदर गिलम बिछी है और चबूतरे की किनार पर तकिये शोभायमान हैं। चबूतरे की किनार पर चारों तरफ 8 स्तम्भ आये हैं, जिनके ऊपर छत आया है। इन स्तम्भों के अंदर से छत में जाने के लिये स्वचालित सीढ़ियां आयी हैं। छत पर नौ देहुरियां (गुम्मटियां) आयी हैं।

13 देहूरी के घाट की शोभा 9 देहुरी के घाट के समान ही है, फर्क सिर्फ इतना है कि छत में 9 की जगह 13 देहुरियां आयी हैं। 16 देहुरी के घाट में 500 मंदिर के लम्बे–चौड़े चबूतरे के ऊपर 25 स्तम्भों (5 स्तम्भों की 5 हारों) पर कुल 16 देहुरियां आयी हैं। झुण्ड के घाट की शोभा कुछ विशेष है। इसका कारण यह है कि जब हम हौज कौसर ताल में आते हैं, तो हमारे सुखपाल पश्चिम दिशा में वन रौंस पर उतरते हैं, और फिर इसी झुण्ड के घाट के द्वार से ही हम हौज कौसर ताल में प्रवेश करते हैं।

हौजकौसर ताल की पश्चिम दिशा में ढ़लकती पाल से लगते हुए, वन की रौंस पर 250 मंदिर के लं.–चौ. कमर भर ऊँचें दो चबूतरे हैं जिनके मध्य में 250 मं. का लं.–चौ. चौक है। चबूतरों की तीन दिशाओं से सीढ़ियाँ उतरी हैं, बाकी जगह में चबूतरे की किनार पर कठेड़ा शोभायमान है। चौक से ढ़लकती पाल पर 3 सीढ़ियाँ चढ़ी हैं। इन दोनों चबूतरों से लगकर ढ़लकती पाल पर 250 मं. की लंबी–चौड़ी दो देहुरियाँ हैं, जिनमें भोम भर ऊँचे 4–4 स्तम्भों के ऊपर गुम्मट, कलश, ध्वजा, पताकाओं की सुंदर शोभा है। इन देहुरियों के मध्य में 250 मंदिर का लं.–चौ. चौक है। इन दोनों देहुरियों में कुल 8 स्तम्भ व 10 मेहराबें हैं, 4–4 मेहराबें दोनों चबूतरों में व 2 मेहराबें मध्य चौक में हैं। यह झुण्ड के घाट का दरवाजा कहलाता है। जब श्रीराजश्यामाजी व सखियाँ हौजकौसर ताल आते हैं, तो इसी द्वार से प्रवेश करते हैं। तब सखियाँ चारों ओर की शोभा देखकर बहुत आनंदित होती हैं।

जब आवत इत अर्श से , चढ़िये इन घाट ताल ।
चबूतरे दोए द्योहरी , सीढ़ियाँ चढ़ते होत खुशाल ।। परि. 8/3

इन दोनो देहुरियों के ठीक सामने चौरस पाल के ऊपर प्रथम भाग में 250 मंदिर के लं.–चौ. कमर भर ऊँचें दो चबूतरे आये हैं। जिनके मध्य में 250 मं. का लं.–चौ. चौक है। एक चबूतरे के एक दिशा में 4 भाग हैं। मध्य के दो भाग में द्वार है, जिसके सामने 3 सीढ़ियाँ उतरी हैं तथा दायें–बायें के 1–1 भाग में 8–8 वृक्ष दीवाल के रूप में शोभायमान हैं। इसी प्रकार दोनों चबूतरों में कुल मिलाकर 16 दीवालें व 10 मेहराबें हैं। जिनमें से दो मेहराबें मध्य चौक की हैं। इसी प्रकार रंगबिरंगे फल, फूल, पत्तों, डालियों की ऊपरा ऊपर 5 भोम छठी चांदनी बन गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे फूलों से सजा हुआ सुंदर द्वार हमारा स्वागत कर रहा हो कि आओ सखियों! इस सुंदर हौज कौसर के ताल में अनंत खुशबुओं और रंगों के साथ झीलने और रामतों का आनंद लो। जब श्री राजश्यामाजी व सखियाँ हौजकौसर ताल में आते हैं, तब इस झुण्ड के घाट में बैठकर शीतल सुगंधित हवा के बीच हांस विनोद करते हैं।

जब हक आवत ताल को , आए विराजत इत ।
सो खेल जल का करके , ऊपर सौक को बैठत ।। परि. 8/29

जब हौज कौसर ताल में झुण्ड के घाट से श्री राज श्यामा जी एवं सखियां प्रवेश करती हैं तो यहां विभिन्न प्रजाति के सुंदर पशु–पक्षी फूलों की मालायें लेकर तरह तरह के वाद्य यंत्रों को बजाते हुए एवं मधुर वाणी निकालते हुए श्री राज श्यामा जी एवं सखियों का अभिवादन करते हैं, उन पर फूल बरसाते हैं।

कई रेहेत अंदर जानवर, कई विध बोलें बान।
ए खूबी खुसाली हक की, जुदी जुदी कई जुबान।। परि. 14/50

चौरस पाल पर जो बड़ोवन के वृक्षों की तीन हारें आयी हैं, उनमें अनेकों प्रजातियों के पक्षी जैसे मोर, पपीहा, कोयल इत्यादि अपनी अलग–अलग सुंदर वाणी में धणी का गुणगान करते हैं, अपनी प्रसन्नता का इजहार करते हैं। कोयल की मीठी बोली में पिउ–पिउ, धणी–धणी की आवाज से पूरा हौज कौसर ताल चहचहा उठता है।

जब हम सखियां एवं वाला जी यहां आते हैं तो बड़ोवन एवं झुण्ड घाट के फूल मानो और अधिक नूरमयी और सुगंधित हो जाते हैं, जैसे हमारे आने की खुशी में असंख्यों जुगनू चमक पड़े हों।

चौरस पाल के (ताल की तरफ के) चौथे हिस्से में पाल कटी हुयी है, यहां ताल के जल रौंस एवं पाल अंदर के महलों में जाने के लिये सीढ़ियां उतरी हैं, जिन्हें कटी पाल की सीढ़ियां कहते हैं। चौरस पाल के नीचे महलों की दो हारें एवं उनके मध्य स्तम्भों की दो हारें आयी हैं।

आईये! अब कटी पाल के द्वारों से होकर पाल के अंदर के महलों की शोभा देखते हैं। दरवाजे से प्रवेश करने के बाद, चौरस पाल के नीचे एक गली, फिर मंदिरों की एक हार, फिर स्तम्भों की दो हारें व 3 गलियां और फिर पुनः मंदिरों की दूसरी हार आयी है। स्तम्भों की दो हारों में चार ताली के हिण्डोले लगे हैं।

हम सब सखियां हौज कौसर में दो प्रहर तक रहती हैं। अर्थात् 3–6 बजे तक एवं 6–9 बजे तक।

आईये! अब इन मंदिरों से बाहर निकलकर हम हौज कौसर ताल की तरफ आगे बढ़ते हैं। कटी पाल से उतरकर हम जल रौंस पर आते हैं। जल रौंस से आगे जल चबूतरे पर 3–3 सीढ़ियां उतरी हैं। जल चबूतरा एक ऐसा चबूतरा है, जहां कमर भर गहरा पानी होता है। इस चबूतरे पर हम कमर भर गहरे जल में खड़े होकर कई अलग तरह की रामतें करते हैं। हम सब बारह हजार सखियां मिलकर चारों तरफ से वाला जी पर जल उछालती हैं। तब वाला जी हम सब सखियों पर इस तरह से जल उछालते हैं कि सब सखियां दूर भागने लगती हैं। इस जल चबूतरे से हौज कौसर ताल की तली तक जाने के लिये जल के अंदर घेर कर सीढ़ियां उतरी हैं।

यहां जल के जीव भी धनी व सखियों को रिझाने में पीछे नहीं रहते हैं। दिन–रात जल के किनारे 'पिया–पिया','धनी–धनी' करते हुए धनी के गुणगान करते रहते हैं। छोटे जीव मेंढ़क, मछली, कछुआ आदि से लेकर बड़े मगरमच्छ आदि भी अनेक प्रकार से मधुर वाणी सुनाकर, खेल करतब दिखाकर धनी को रिझाते हैं। कभी कभी उनका पूरा जुत्थ (समूह) एक साथ मिलकर अनेक कलाओं से नाचते–कूदते हुए धणी को रिझाता है। अलग–अलग प्रकार के जीव इस प्रकार गाते हैं कि सबका स्वर एक समान रहता है।

जल में जीव बसत हैं , सो सुंदर सोभा अमान ।
फौज बाँध आगूं धनी के , खेल करें कई तान।। परि. 28/22
मच्छ कच्छ मुरग मेंढ़क , कई रंग करें अपार ।
जुदी जुदी बानी बोलत , स्वर राखत एक समार।। परि. 28/23

यमूना जी हौजकौसर ताल की पूर्व दिशा से, 16 देहूरी के घाट के नीचे से लहराती हुई ताल में प्रवेश करती है। यहां स्तम्भों की 5 हारों के मध्य 4 घड़नाले बने हुए हैं। इन चार घड़नालों से होती हुई यमूना जी जब हौज कौसर ताल में प्रवेश करती है तो अत्यंत सुंदर शोभा को धारण करती है। 16 देहुरी के घाट के नीचे प्रथम भोम में पाल अंदर के महल नहीं आये हैं। यहां की शोभा बाकि तीनों दिशाओं से अलग है। यहां 5 स्तम्भों की 7 हारें शोभायमान हैं। जिनके मध्य में एक अत्यंत सुंदर कुण्ड की शोभा आयी है। इस कुण्ड से बहती हुई यमूना जी के दर्शन कर सकते हैं। इस कुण्ड में झीलना करने के पश्चात् इन पांच स्तम्भों की 7 हारों में हम सखियां बैठ जाती हैं तथा यहां से पूर्व दिशा में यमूना जी के प्रवेश करने का तथा वनों का सुंदर दृश्य देखते हैं। एवं पश्चिम दिशा में हौज कौसर ताल की सुंदर शोभा देखती हैं। हम सखियां कभी यमूना जी एवं दायें–बायें आये जल रौंस में खेलती हैं तो कभी हौज कौसर ताल के पाल में दौड़ती हुई, अनेक प्रकार की रामतें खेलती हुई हांस–विनोद करती हैं। हौज कौसर ताल एक हीरे का बना है, जिस पर बड़ोवन के वृक्षों की नूरी शोभा झलकने से हरे रंग (पाच

नग) का दिखायी देता है। हौजकौसर ताल के चारों तरफ स्थित कुंज–निकुंज वनों की मधुर खुशबु हौज कौसर को महका रही है।

झुण्ड के घाट, 9 देहुरी के घाट एवं 13 देहुरी के घाट में चौरस पाल के तीसरे हिस्से में पाल काटकर घाट की सीढ़ियां सीधे नीचे चौक पर उतरी हैं। हौज कौसर ताल 128 हांस का आया है। 128 हांस की संधियों में 128 बड़ी देहूरियां (चौरस पाल के तीसरे हिस्से में) शोभायमान हैं। हौज कौसर के 128 हांस 128 रंग में शोभायमान हैं। प्रत्येक बड़ी देहुरी दो–दो रंग की दिखायी दे रही है। जल में 128 रंगों के प्रतिबिम्ब झलक रहे हैं। जल में जिस हांस के सामने से जल के जीव (मछली, मेंढक आदि) गुजरते हैं, वे उसी रंग के दिखायी देते हैं।

जल के जेते जानवर , जिन रंग तले निकसत ।
तैसा ही रंग भासत , सुख शोभा कहूँ क्यों इत ।। बड़ी वृत्त 89/57

आईये! अब हौज कौसर ताल के ठीक मध्य में स्थित टापू महल की शोभा निहारते हैं, जो 64 पंखुड़ी वाले कमल के फूल के समान खिला दिखायी देता है, क्योंकि इसमें 64 गुर्ज हैं। जब टापूमहल की चांदनी में श्री राज श्यामा जी एवं सखियां शुक्ल पक्ष की चौदश को सब श्रृंगार से युक्त होकर विराजमान होते हैं, तब इस समय की शोभा अद्भूत दिखायी देती है। इस समय टापूमहल की नूरमयी किरणें स्तम्भ रूप होकर आकाश की तरफ जाती दिखायी देती हैं। ऊपर आकाश से चंद्रमा का पूर्ण प्रकाश भी नीचे आ रहा होता है, जिससे टापूमहल की चांदनी तेजोमयी प्रकाश से भर जाती है। इस प्रकार टापूमहल व चंद्रमा का प्रकाश मिलकर एक स्तम्भ के रूप में दिखायी देता है। टापूमहल के चारों तरफ स्थित ताल के जल पर जब ये किरणें पड़ती हैं, तब जल से उठने वाला प्रकाश भी टापूमहल के प्रकाश को घेरकर स्तम्भ रूप में आकाश तक जाता हुआ दिखायी देता है। इनको घेरकर वनों की ज्योति भी जगमगाती हुई दिखायी दे रही है। इस प्रकार ये अनंत ज्योतियां आकाश में नहीं समा पाती हैं।

तखत रूहों बीच चांदनी, बैठे बड़ी रूह खावंद।
सो थंभ हुआ चांदनी, ऊपर आया पूरन चन्द।। परिक्रमा 9/43
इन नूर थंभ की रोसनी, पड़ी ताल पर जाए।
जल थंभ कियो आसमान लों, घेरयो चंद गिरदवाए।। परिक्रमा 9/45

टापू महल 64 हांस का है। टापू महल में सर्वप्रथम जल रौंस आया है, फिर कमर भर ऊंचा चबूतरा आया है, जिसमें सर्वप्रथम मंदिरों की एक हार आयी है, (जिसमें 60 मंदिर एवं चारों दिशा में 4 मुख्य दरवाजे हैं)। इन मंदिरों की संधि में बाहरी तरफ 64 गुर्ज शोभायमान हैं। ताल के जल की लहरें जब इन गुर्जों व मंदिरों से टकराती हैं, तो करोड़ों मणियों का प्रकाश चारों ओर जगमगा उठता है।

''जल मोहोल तले जो खलके , मंदिर कोट प्रकाश मनी झलके।'' परि. 3/42

मुख्य दरवाजे से अंदर प्रवेश करने पर (मंदिरों की प्रथम हार के भीतरी तरफ) स्तम्भों की एक हार एवं दो गलियां दिखाायी देती हैं। इनके पश्चात् पुनः मंदिरों

की एक हार आयी है। इनके पश्चात् पुनः स्तम्भों की एक हार–दो गलियां आयी हैं। इनके मध्य में कमर भर ऊंचा विशाल चबूतरा शोभायमान है। चबूतरे की किनार पर स्तम्भों की तीसरी हार आयी है। चबूतरे के तीन भाग हैं। तीन सीढ़ियां चढ़कर जब हम चबूतरे पर आते हैं तो प्रथम भाग में बैठक, सिंहासन–कुर्सियां शोभायमान हैं। इसके आगे द्वितीय भाग में चारों तरफ रंगबिरंगे फूलों, नहरों व फव्वारों से युक्त बगीचे शोभायमान हैं। इनके भीतरी तरफ, चबूतरे के मध्य में कुण्ड शोभायमान है, जिसके चारों तरफ रौंस आयी है।

इसी प्रकार टापू महल की तीन भोम व चौथी चांदनी आयी है, फर्क मात्र इतना है कि कुण्ड व बगीचे केवल प्रथम भोम में विद्यमान है, दूसरी, तीसरी भोम व चौथी चांदनी पर नहीं आया है। जब हम सखियों की इच्छा होती है कि ढपे हुए कुण्ड में झीलना करना है तो हम टापू महल के प्रथम भोम में स्थित कुण्ड में झीलना करते हैं और यदि खुली चांदनी (खुले आकाश) में झीलना करने की इच्छा होती है तो हम हौज कौसर ताल में झीलना करते हैं। तत्पश्चात् टापू महल की चांदनी में अनेक प्रकार के वनफल–मेवे आरोगते हैं। तत्पश्चात् यहां नृत्य की लीला होती है। इस चांदनी में मध्य में एवं किनार पर अनेक प्रकार की मनोहर बैठकें (2, 4, 200 सखियों वाली कुर्सियां) शोभायमान हैं।

जब हम रंगमहल से शुक्ल पक्ष की चौदश को दोपहर 3 बजे हौज कौसर ताल में आते हैं तो सर्वप्रथम 6 घड़ी (सवा दो घण्टे) तक चौरस पाल पर अनेक प्रकार से खेल–रामतें करते हैं। सखियाँ दोनों पालों पर अनेकों प्रकार से दौड़ती–खेलती हैं––जैसे पकड़न पकड़ाई, किकली की रामतें।–। ये पालें एक हीरे की हैं, यहाँ पर जरा भी रेती नहीं है। अतः इतनी चिकनी है कि सखियों को यहाँ दौड़ने–खेलने में बहुत आनंद आता है। कभी बड़ोवन की डालियाँ पकड़कर लटक जाती हैं, कभी बड़ोवन के ऊपर के भोमों में चढ़ जाती हैं। फिर सब सखियाँ मिलकर अपने प्राण प्रियतम के साथ बड़ोवन के पांचों भोमों में आये हिण्डोलों में झूला–झूलती हैं।

ए भोम इन विध की , पाऊं ना खूंचत रेत ।
खेलत हैं इत रूहें , नए नए सुख लेत ।। परि. 8/68
ऊपर बन बुजरक , कई हिण्डोले हींचत ।
कई डारी बन झूमत , कई विध खेल करत।। परि. 8/83

कभी सखियां अनेक प्रकार के सुंदर पशु–पक्षियों के साथ खेलती हैं, उनके खेल–तमाशे देखती हैं, उन पर सवारी का आनंद लेती हैं। तत्पश्चात् एक घड़ी में हौज कौसर ताल में झीलना करते हुए जल क्रीडा करती हैं। जल के जीवों जैसे मछली, मगरमच्छ, कछुआ आदि पर सवारी करते हैं, जल के जहाजों व कश्तियों पर सवारी का आनंद लेते हैं। उनमें बैठकर टापूमहल के चारों ओर घूमते हैं। जल रौंस से लगती हुई 12,001 फूलों से सजी मनवेगी इच्छाचारी कश्तियां हाजिर हो जाती हैं। सभी सखियां वाला जी के साथ इन कश्तियों में बैठकर तालाब में दूर–दूर तक वाला जी के संग एकांत सुख के लिये चली जाती हैं। ताल को

सुंदर, नूरमयी बादलों ने घेर रखा है। इस कुहरे के बीच सखियां वाला जी के साथ कोमल कश्तियों में यमूना जी के ऊपर विहार करने का आनंद लेती हैं। कश्तियां तीन प्रकार की हैं। पहली – सिंहासन कश्तियां, जिसमें दो सिंहासन आमने–सामने आए हैं। इनमें सखियां सामने बैठकर वाला जी को निहारने का सुख प्राप्त करती हैं।

पिउ नेत्रों नेत्र मिलाईये, ज्यों उपजे आनन्द अति घन।
तो प्रेम रसायन पीजिये, जो आतम थे उत्पन्न।।

अर्थात् प्रेम की अभिव्यक्ति नेत्रों से होती है। जब सखियां धणी के नेत्रों से नेत्र मिलाती हैं तो उनको धणी के हृदय में चल रहे प्रेम भावों का पता चल जाता है, जिससे उनके हृदय में बहुत अधिक आनंद व प्रेम उत्पन्न हो जाता है।

इन कश्तियों में छत नहीं आयी है। दूसरी – शैय्या कश्तियां, जिनमें बीचों बीच कोमल शैय्या आयी है और चारों और कठेड़ा व तकिये आए हैं। इन कश्तियों में सखियां वाला जी के संग पौढ़कर, नीचे ताल और ऊपर बादल (कुहरे) के सुंदर दृश्य का आनंद लेती हैं। इन कश्तियों में भी छत नहीं आयी है। तीसरी प्रकार की कश्तियां हैं – खटछप्पर की कश्तियां। इन कश्तियों में नीचे शैय्या, तकिये व कठेड़ा तो आये ही हैं, साथ में सुंदर खुशबुदार फूलों की छत भी आयी है। शैय्या में 4 डाण्डे हैं, जो फूलों से ढपे हुए हैं, छत भी फूलों की आयी है। और फूलों की बेलों ने चारों ओर परदों का निर्माण कर दिया है। हम सखियां धणी के चरणों को अपने हृदय में बसाकर इन सुंदर नूरमयी कोमल शैय्याओं का सुख लेती हैं।

मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखो नरम कदम।
इतहीं सेज बिछाए देऊं, जुदे करो जिन दम।।

हम सखियां इन कश्तियों में धणी से चित्त चाहा सुख प्राप्त करने के बाद कश्तियों को टापू महल की ओर चलने की आज्ञा देती हैं। प्रेम (इश्क) के सागर में डुबकी लगाने के बाद हम सखियां कश्तियों से उतरकर टापू महल के जल रौंस पर आ जाती हैं।

साकी पिलावे सराब, रूहें प्याले लीजिये।
हक इस्क का आब, भर भर प्याले पीजिये।।

इसके बाद 1 घड़ी में टापू महल के मंदिरों में जाकर श्रृंगार करते हैं। तत्पश्चात् चंद्रमा के शीतल प्रकाश में टापूमहल की चांदनी में जाकर अनेक प्रकार से खेल रामतें करते हुए हांस–विनोद करते हैं। वनफल–मेवा आरोगते हैं। श्री राज श्यामा जी कभी यहाँ मध्य चबूतरे पर सिंहासन पर विराजमान होते हैं। तब कभी सखियाँ मध्य चबूतरे पर ही धनी के पास 6,000 कुर्सियों में (एक–एक में दो–दो) बैठती हैं, कभी चाँदनी के किनार के चबूतरे पर 3,000 कुर्सियों में (एक–एक कुर्सी में 4–4) बैठती हैं, तो कभी 60 गुर्जो की चाँदनी पर बड़े कुर्सियों पर (एक–एक कुर्सी में 200–200) बैठती हैं। श्रीराजजी महाराज, सखियों को कई प्रकार से प्रेममयी बातें

करते हुए आनंद देते हैं। अपनी अमृतमयी नजरों से प्रेम रूपी अमीरस का पान करवाते हैं तथा कई प्रकार से हांस विनोद करते हैं।

चाँद चौदमी रात का , बैठे चाँदनी नूरजमाल ।
सनमुख सबे बैठाए के , करें खावंद रूहें खुसाल ।। परि. 9/28
अमृत खसम रूहन पर , नूर नजरों सींचत ।
सो रस रूहें रब का , सनमुख रोसन पीवत ।। परि. 9/29

इस समय सखियाँ चारों तरफ के सुंदर दृश्यों को निहारते हुए कई प्रकार से आनंद लेती हैं। चारों तरफ अनेकों रंगों के प्रतिबिंब से युक्त, ताल की अद्‌भुत शोभा दिख रही है। चारों तरफ पाल पर 128 देहुरियों तथा बड़ोवन के वृक्षों के पाँचों भोमों की शोभा भी बहुत सुंदर दिख रही है।

जब खूबी ताल यों देखिये , चढ़ चाँदनी पर ।
फिरती पाल बन द्‌योहरी , जल सोभित अति सुंदर ।। परि. 9/8

तत्पश्चात् नृत्य की लीला का आनंद लेकर सुखपाल में सवार होकर रंगमहल की तरफ प्रस्थान करते हैं।

कुंज–निकुंज

रंगमहल परमधाम के ठीक मध्य में एक ताज की तरह, राजा के मुकुट की तरह जगमगा रहा है। सम्पूर्ण परमधाम नूर तत्व का है। इस तत्व की चार विशेषताएं हैं–

1– कोमलता 2– सुगंधि 3– स्वप्रकाशिता 4– चेतनता

नूर तत्व की पहली विशेषता है कोमलता। परमधाम की प्रत्येक लीलारूप सामग्री अत्यंत कोमल है। दूसरी विशेषता है सुगंधि। इसलिये हम परमधाम में जहां भी विचरण करते हैं, हमारी नासिका अनंत प्रकार की सुगंधियों का अनुभव करती है। तीसरी विशेषता है स्वप्रकाशिता। परमधाम की प्रत्येक वस्तु, चाहे वह जल हो या धरती हो, वनस्पति हो या पशु–पक्षी, प्रत्येक लीलारूप सामग्री में से अनेक रंगों की किरणें निकलते रहती हैं। चौथी विशेषता है चेतनता। परमधाम की प्रत्येक वस्तु चेतन (आत्म स्वरूप) है। सम्पूर्ण परमधाम इन चार विशेषताओं को धारण किए नूर तत्व से युक्त है।

यहाँ के वृक्ष, पशु–पक्षी, नदियाँ आदि सभी नूरमयी, चेतन व इश्क के स्वरूप हैं इसलिए इन वृक्षों का कभी एक पत्ता भी नहीं गिरता है, न ही पशु–पक्षियों का पंख या बाल गिरता है। ये सभी अखण्ड, अनादि हैं।

एक बाल न गिरे पसुअन का , न खिरे पंखी का पर ।
पात पुराना न होवहीं , अर्स जंगल या जानवर ।। परि. 32/31

रंगमहल की दक्षिण दिशा में बट पीपल की चौकी आयी है। कुंज–निकुंज वन, बटघाट से चलकर, बट–पीपल की चौकी के दक्षिण से होते हुए, हौजकौसर ताल